मनोज
कॉमिक्स
मूल्यः 8.00
राम-रहीम
और
आग लगा देश

राम-रहीम और आग का देश

लेखक :- बिमल चटर्जी, चित्रांकन :- दिलीप कदम, विजय कदम (त्रिशूल कॉमिकी आर्ट)

डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ राम-रहीम सीरीज

दूसरा खिड़की के भीतर हाथ डालकर डिबिया से कोई द्रव्य स्प्रे करने लगा।
सिस्स...सि...!

उसके बाद उन्होंने खिड़की बन्द करदी और स्प्रे का प्रभाव खत्म होने का इन्तजार करने लगे।
कड़ाक
उफ! इस साले मौसम को भी आज ही शत खराब होना था।

कुछ मिनट बाद—
मेरे विचार से दवाई ने अपना काम पूरा कर दिया होगा। आओ, अब भीतर चलते हैं।
ठीक है। लेकिन चेहरे पर रुमाल बांधे ही रहना।

दोनों खिड़की खोल-कर भीतर प्रविष्ट हो गये।
भीतर घुसकर दोनों ने राम-रहीम को हिला-डुलाकर देखा।
यह तो बेहोश है।
यह भी।

हमें सिर्फ रहीम का अपहरण करने का ऑर्डर मिला है, इसलिए उसे ही उठा लो।
ठीक है।

उस व्यक्ति ने बेहोश रहीम को उठाकर अपने लम्बे-चौड़े कंधे पर डाल लिया, फिर दोनों खिड़की की ओर बढ़े।

खिड़की लांघकर दोनों लॉन में पहुंच गये और पिछवाड़े की चारदीवारी की ओर बढ़े।
कड़...कड़...कड़ाक!
मौसम खराब जरूर है, लेकिन इसने हमारा साथ अच्छा दिया है!
ठीक कहते हो। वर्षा के शोर व बिजली की गर्ज से हमारे कदमों की आवाज व खिड़की खोलने व बन्द करने की आवाज भी दबकर रह गई। साथ ही इस वर्षा में यहां के नौकर-चाकर भी घर से बाहर नहीं निकले।
पिछवाड़े की चारदीवारी काफी नीची थी। दोनों उसे आसानी से लांघकर...
...दूसरी ओर सड़क पर पहुंच गये। कुछ ही दूरी पर उनकी कार खड़ी थी।
उनके कार के अंदर पहुंचते ही कार की ड्राइविंग सीट पर बैठे व्यक्ति ने कार स्टार्ट कर दी।
रघु, कोई गड़बड़ तो नहीं हुई ना!
नहीं! सारा काम आसानी से हो गया!
अगले ही पल ड्राइवर ने कार एक तरफ दौड़ा दी।

इधर जब सुबह राम की आंख खुली।
अरे! यह शरीर में थकान पैदा करने वाला दर्द क्यों हो रहा है?
तभी उसकी दृष्टि रहीम के खाली बिस्तर पर पड़ी।
अरे, आज तो रहीम बहुत जल्दी उठ गया! वरना वह तो दिन चढ़े तक खर्राटे भरता रहता था
...परन्तु यह अनहोनी हो कैसे गई? शायद बाथरूम में है, उसी से पूछता हूं!
रहीम, आज तुम इतनी सुबह कैसे उठ गये?
परन्तु काफी आवाजें लगाने पर भी जब रहीम का भीतर से कोई उत्तर नहीं आया तो राम ने धकेलकर बाथरूम का दरवाजा खोल दिया।
अरे, वह तो यहां नहीं है! कहा चला गया?
शायद बिना हाथ-मुंह धोये ही नाश्ता करने पहुंच गया होगा, पेटू है ना। उससे तो भूख बर्दाश्त ही नहीं होती। खैर, मैं तो हाथ-मुंह धो ही लेता हूं।
नित्यक्रिया से फारिग होने के पश्चात् जब राम नाश्ते की टेबल पर पहुंचा तो वहां भी रहीम को मौजूद न पाकर चौंक उठा।
यहां भी नहीं है वह, कहां है?
खड़े-खड़े क्या सोच रहे हो बेटा? बैठ जाओ, मैं नाश्ता ले आई हूं!
ओह! मम्मी! यह रहीम कहां गया?
मुझे क्या मालूम? रहीम के बारे में तुम्हें ही मालूम होगा।
तो क्या रहीम मुझसे पहले यहां नहीं आया!
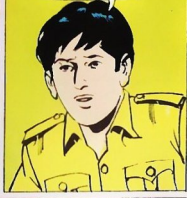
नहीं तो! लेकिन बात क्या है? तुम अचानक इतने परेशान क्यों नजर आने लगे?
वह कमरे में भी नहीं है मम्मी! सुबह जब मेरी आंख खुली तो मैंने उसका बिस्तर खाली देखा।

ओह! कहां जा सकता है वह?
यही बात तो मेरी भी समझ में नहीं आ रही। वैसे भी वह इतनी सुबह उठने वालों में से नहीं है।

दोनों आवाजें लगा-लगाकर रहीम को पूरे घर में ढूंढ़ने लगे।
रहीम-रहीम!
रहीम, मेरे भाई, कहां हो तुम?

बेटा, यदि तुम हमसे आंख-मिचौली खेल रहे हो तो ईश्वर के लिये यह खेल बन्द कर दो! देखो, चिंता के मारे हमारी क्या हालत हो रही है!

अन्त में चक्कर काटते हुए दोनों राम वाले कमरे में वापस पहुंच गये।
हमने सारा घर छान मारा। यहां तो वह नहीं है, कहीं वह बाहर तो नहीं चला गया।
नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। तुम तो उसके स्वभाव से अच्छी तरह परिचित हो मम्मी। एक तो वह सुबह इतनी जल्दी उठने वालों में से नहीं है, फिर बिना किसी को कुछ बताये घर से बाहर जाना... नहीं, मैं तो सोच भी नहीं सकता कि वह ऐसा कर सकता है।

तभी घर का माली वहां आया।
बीबीजी! पैसे दे दीजिए, ताकि मैं बाजार से जाकर बीज ले आऊं।
रामू, तुमने रहीम को देखा है। कहीं वह तुम्हारे सामने घर से बाहर तो नहीं गया।
नहीं बीबीजी!

फिर कहां चला गया वह?
तभी राम के नथुनों से कमरे में फैली हल्की, लेकिन विचित्र-सी गंध टकराई।
हैं! यह गंध कैसी?
सूं.... सूं...!
???
!!!
क्या हुआ बेटा? तुम क्या सूंघ रहे हो?
कमरे में एक गंध मौजूद है मम्मी! और यदि मेरी नाक मुझे धोखा नहीं दे रही है तो यह गंध क्लोरोफार्म की है।
क्या ऽऽऽ?
हां मम्मी, मुझे लगता है कल तूफानी रात में हमारे कमरे में कोई आया था
...वो देखिये, खिड़की भी खुली हुई है, जबकि मुझे याद है, कल रात मैं स्वयं अपने हाथों से उसे बंद करके सोया था, ताकि पानी भीतर न आ जाये।
???
और यह देखिये मम्मी, फर्श पर जूतों के निशान हैं, मिट्टी लगे हुए। यह दो व्यक्तियों के कदमों के निशान हैं
???
...जरूर दो व्यक्ति इस खिड़की के रास्ते से ही हमारे कमरे में प्रविष्ट हुए थे और उन्होंने कमरे में प्रविष्ट होने से पहले भीतर क्लोरोफार्म, यानी बेहोश करने वाली दवा छिड़की होगी।
???
ल ल लेकिन क्यों?
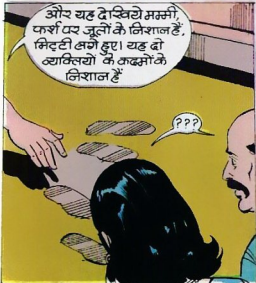
स्पष्ट है, हमें बेहोश करने के लिए।
त... लेकिन क्यों? त... त... तुम क... कहना क्या चाहते हो?
यहां के हालातों को देखते हुए मुझे अब कोई संदेह नहीं रह गया है मम्मी कि रहीम का अपहरण किया गया है।
नहीं...!
य... यह... त... तुम क्या कह रहे हो बेटा।
सुबक... सुबक...!
मैं ठीक कह रहा हूं रामू काका, लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आगन्तुकों ने रहीम का अपहरण क्यों किया?
उसे तुम कहीं से भी ढूंढ कर मेरे सामने लाओ बेटा, वरना मैं जीवित नहीं रहूंगी... सुबक... सुबक...
...उसे मैंने अपनी कोख से जन्म नहीं दिया तो क्या हुआ, वर्षों से तुमसे भी बढ़कर लाड़-प्यार से पाला है! सुबक... सुबक!
धैर्य रखो मम्मी! रहीम यदि तुम्हारा बेटा है तो मेरा भी भाई है! मैंने भी उसे सगे भाई से बढ़कर चाहा है
...तुम चिंता मत करो। वह जहां कहीं भी होगा, मैं उसे खोज निकालूंगा और जिस किसी ने भी उसका अपहरण किया होगा, उसके हाथ काटकर फेंक दूंगा।
तभी राम की दृष्टि खिड़की के नीचे पड़ी किसी वस्तु पर पड़ी।
???
ओह! वह क्या है?
!!

हैं! लॉकेट!
यह यहां कहां से आया?
???
जरूर यह उनमें से किसी एक का होगा, जो यहां आये थे। इस लॉकेट पर अंग्रेजी का "जे" अक्षर भी खुदा हुआ है।
इसका मतलब? इस लॉकेट के मालिक का नाम जे से शुरू होता है।
तभी राम के मस्तिष्क में एक धमाका-सा हुआ।
जग्गू!
जग्गू! कौन जग्गू?
जहां तक मेरा ख्याल है, यह नाम शहर के एक कुख्यात बदमाश का है।
तुम बिल्कुल ठीक समझे रामू काका!
उसके बाद राम फटाफट कपड़े बदलने लगा।
यह तुम अचानक कहां जाने की तैयारी करने लगे?
जग्गू से निपटने की। इससे पहले कि जग्गू रहीम का कोई अहित करे, मैं तुरन्त उससे जाकर मिलना चाहता हूं।
शीघ्र ही राम तैयार होकर दरवाजे की ओर बढ़ा।
नाश्ता तो करले जाओ बेटा।
अब तो रहीम के साथ वापस लौटकर ही नाश्ता करूंगा मम्मी।
और कुछ ही देर बाद उसकी मोटरसाइकिल मुख्य सड़क पर एक ओर उड़ी चली जा रही थी।
जग्गू दादा! यदि रहीम को कुछ हो गया तो मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा!

अब बता, रहता है या नहीं।

मुझे मत मारिये साहब! वह यहीं रहता है, अपनी खोली में ही मिलेगा।
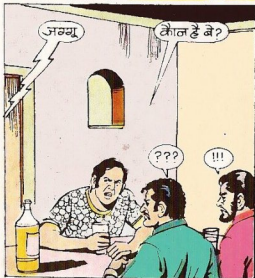
हैं... हैं... हैं! आओ-आओ रामभाई! कहो, कैसे आना हुआ?
यदि अपनी भलाई चाहते हो तो चुपचाप रहीम को मेरे हवाले कर दो...
...बताओ, कहां छिपाया है तुमने रहीम को? और उसका अपहरण तुमने क्यों किया?
य... यह... यह तुम क्या कह रहे हो राम भाई। मैं भला रहीम का अपहरण क्यों करने लगा।
राम ने तुरन्त जेब से लॉकेट निकालकर जग्गू के चेहरे के सामने कर दिया।
और कुछ नहीं मालूम तो न सही, लेकिन तुम इस लॉकेट को तो अच्छी तरह से पहचानते हो ना।
अरे! मेरा लॉकेट, यह तुम्हारे पास कहां से आया?
तभी राम का सीधा हाथ बड़ी तेजी से दाएं-बायं घूमने लगा।
धड़ाक!
ऐसे!
उफ!
ढिशुम..!
हाय!
अब भी वक्त है जग्गू, सब कुछ सच-सच बता दो, वरना मैं तुम्हारा ऐसा हाल करूंगा कि तुम्हें पैदा करने वाला भी नहीं पहचान पायेगा।
आह! मुझे कुछ नहीं मालूम।
तड़ाक!
जग्गू को पिटता देख उसके दोनों साथियों ने चाकू निकाल लिये।
ऐ छोकरे, छोड दे जग्गू दादा को।
अच्छा!
अबे... अबे, यह क्या कर रहे हो तुम?

तभी जग्गू को छोड़ राम के हाथ-पैर दोनों एक साथ बिजली की-सी गति के साथ घूमे और–
कड़ाक!
ढिशुम!
उफ!
हाय! मर गया!
सत्यानाश!

राम के एक ही वार में दोनों जमीन सूंघने लगे।
उठो उस्तादो, और मुकाबला करो। चलो शाबाश। उठाओ अपने चाकू और शुरू हो जाओ।
तुम्हारी तो

दोनों बदमाश, जो राम से अपरिचित थे, अपने चाकू उठाकर गुस्से में राम की ओर झपटे।
आओ... आओ शाबाश!
अबे उल्लू के पट्ठो, यहां क्या कर रहे हो?

उस्ताद! तुम अब हमें मत रोको। हम इस टुच्चे के टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।
हां उस्ताद! और इसकी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके किसी गंदे नाली के गटर में फेंक देंगे। किसी को कुछ भी पता नहीं चलेगा।

अबे सूअरो, जानते हो तुम किससे टकराने जा रहे हो। वह तुम्हारा बाप है, बाप...

तुम तो उसके टुकड़े क्या करोगे, हां, यह जरूर तुम्हारे हाथ-पैर तोड़कर तुम्हारे हाथों में दे देगा।
य... यह तुम क्या कह रहे हो उस्ताद?

मैं ठीक ही कह रहा हूं। यदि तुम इसका नाम जानते होते तो अब तक यहां से भाग गये होते। अबे उल्लू की दुमो, तुम्हारा उस्ताद इससे ऐसे ही नहीं पिट रहा है।
क...क्या नाम है इसका उस्ताद?
राम दी ग्रेट। भारत का महान् बाल जासूस।
क्याsss?
चलो, अब भागो यहां से! मुझे राम भाई से कुछ जरूरी बातें करनी हैं।
बहुत अच्छा उस्ताद।
अगले ही पल जग्गू के दोनों साथी वहां से गधे के सींग की तरह गायब हो गये।
बैठो राम भाई!
मैं यहां बैठने नहीं आया हूं जग्गू। मुझे रहीम चाहिए। अभी और इसी वक्त।
आखिर वही हुआ, जिसका मुझे डर था। तुम यहां तक यानी मुझ तक पहुंच गये।
बको मत। मुझे सिर्फ रहीम के बारे में बताओ।
अफसोस राम भाई। अब रहीम भाई तुम्हें इस देश में नहीं, बल्कि चीन में मिलेगा।
क्या मतलब?

मतलब यह कि मैंने रहीम का अपहरण अपने लिये नहीं, बल्कि चीनी कामरेड त्वांग के कहने पर व उसी के लिये किया था...
???
... त्वांग ने इस काम के लिए हमें पांच लाख रुपये दिये थे। इस काम में मैंने अपने एक दोस्त रघु को पार्टनर बनाया था...
... और मुझे पूरा विश्वास है कि त्वांग रहीम को लेकर अपने देश पहुंच चुका होगा।
ओह! त्वांग चीनी सीक्रेट सर्विस का खतरनाक एजेन्ट।
बिल्कुल वही राम भाई, और यकीन करो मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं। वैसे मैं यह काम किसी भी कीमत पर नहीं करना चाहता था। क्योंकि मुझे तुमसे टकराने का हश्र मालूम है, लेकिन अपनी बूढ़ी मां की बीमारी और पांच लाख की रकम को देखते हुए मैं यह दुस्साहसपूर्ण काम करने को आखिर तैयार हो ही गया।
हुम्म!
जग्गू! इस समय तो मैं जा रहा हूं, लेकिन यदि तुम्हारी बात गलत निकली तो समझ लेना, जो अंजाम तुम्हारा होगा, उसकी तुम कल्पना भी नहीं कर पाओगे...
चट... चट...!
... और रहा त्वांग का सवाल, यदि उसने वास्तव में रहीम का अपहरण किया है और वह उसे अपने देश ले गया है तो मैं वहां जाकर उस समेत उसके देश को आग लगा दूंगा।
गड़प... गड़प! हप्प... हप्प!
राम ने जग्गू के चेहरे को देखकर अंदाजा लगा लिया था कि जग्गू झूठ नहीं बोल रहा, अतः वह उस पर ज्यादा सख्ती न कर खोली से बाहर निकल आया।
यदि त्वांग को भारत में देखा गया है तो इसका पता चीफ अंकल को अवश्य होगा। मुझे तुरन्त उनसे चलकर मिलना चाहिए।

अगले ही पल उसकी मोटरसाइकिल चीफ मुखर्जी के ऑफिस की ओर उड़ी चली जा रही थी।
उधर राम के उस बस्ती से जाते ही दो व्यक्ति जग्गू की खोली में दाखिल हुए।
तुम...?
ही–ही–ही! थैंक्यू जग्गू! तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद! जो तुमने हमारा आखिर काम भी पूरा कर दिया।
क्या मतलब?
हम स्वयं चाहते थे कि किसी तरह राम तुम्हारे घर तक पहुंचे और तुम उसे सारी बात बताकर चीन जाने पर मजबूर कर दो...
...यह काम यदि हम दूसरे तरीके से करते तो शायद उसे हम पर शक हो जाता और वह सावधान हो जाता...
...परन्तु अब वह चीन यानी हमारे देश रहीम को छुड़ाने अवश्य जायेगा।
हा–हा–हा!
ओह! तो यह सब इन्होंने अपनी योजनानुसार ही किया है। तभी इन्होंने मुझसे मेरा लॉकेट मांगा था। शायद राम को यहां तक पहुंचाने के लिये।
तुम ठीक सोच रहे हो जग्गू! हमने तुम्हारा लॉकेट इसीलिए मांगा था कि जरूरत पड़ने पर उसके द्वारा राम को तुम तक पहुंचा दिया जाये और हमारा काम आसान हो जाये...
जब तुम और रघु रहीम को उसके घर से उठा लाये तो मैंने ही खिड़की के रास्ते से तुम्हारा लॉकेट उनके कमरे में फेंक दिया था

...परिणामस्वरूप राम तुम तक पहुंच गया।
तुम, कुत्ते, कमीने, अब मैं समझा तुम्हारी चालाकी। इस तरह तुम एक तीर से तीन शिकार करना चाहते थे...
...यानी रहीम का अपहरण, राम का तुम्हारे देश मे पहुंचना और ऐश कानून के चंगुल में फंस जाना।
हा-हा-हा! अब तुम बिल्कुल ठीक समझे।
मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगा विश्वासघाती। मुझे जो धोखा देता है...हैं! रिवॉल्वर...।
हां जग्गू। जहां हो वहीं रुक जाओ। तुम्हारा काम खत्म हो गया। उसी के साथ तुम्हारी जिंदगी भी...
...हम पीछे से कोई बखेड़ा नहीं चाहते थे, इसलिये हमने तुम्हारे साथी रघु को पहले ही ठिकाने लगा दिया है
क्या कहा, तुमने उसे मार डाला।
हां! और अब तुम्हारी बारी है। चलो, मरने के लिये तैयार हो जाओ। इस बेआवाज रिवॉल्वर की गोली से जल्दी ही किसी को तुम्हारी मौत के बारे में पता भी नहीं चलेगा।
फिर इससे पहले कि जग्गू अपने बचाव के लिये कुछ सोच पाता, उस चीनी के साइलेंसरयुक्त रिवॉल्वर से दो बार हल्की-सी आवाज निकली और जग्गू के सीने से खून का फौहारा छूट पड़ा।
पिट्...पिट्
आह!
आओ चलें, हमें दो घण्टे बाद की फ्लाइट से यह देश छोड़ देना है।
हां, इतना समय तो हमें मेकअप आदि करने में लग ही जायेगा।

उसके बाद दोनों उस खोली से निकलकर बाहर खड़ी अपनी गाड़ी में जा बैठे और गाड़ी वहां से चल पड़ी।
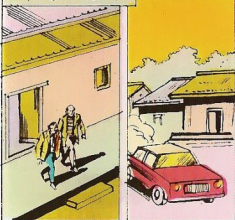
उधर राम ने सीक्रेट सर्विस के ऑफिस में पहुंचकर चीफ मुखर्जी को सारी बात बताई।

तुम्हारे कहने का मतलब है कि चीनी एजेण्ट त्वांग ने रहीम का अपहरण किया है और वह हमारे देश में है।

जी हां, और जग्गू के कहने के मुताबिक वह रहीम को अपने देश ले भी जा चुका होगा।

फिर दूसरी ओर से बोलने वाले ने न जाने क्या कहा कि चीफ मुखर्जी चौंककर उछल पड़े-

क्या कहा? ओ... नो...!

दूसरी ओर से फिर कुछ कहा जाता रहा, जिसे चीफ मुखर्जी ध्यानपूर्वक सुनते रहे। उसके बाद सम्पर्क खत्म होने पर उन्होंने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

किसका फोन था अंकल?

एजेन्ट गोपाल था। तुम्हारा विचार ठीक ही निकला राम! व्वांग भारत में ही है और उसे एक छोटी श्रेणी की बस्ती में देखा गया है।
छोटी श्रेणी की बस्ती में...

...कहीं रामनगर बस्ती में तो नहीं?
तुम ठीक समझे। वहीं कुछ देर पहले जग्गू का खून भी हुआ है।

व्हाट...?

मैं तुम्हारे चौंकने का कारण समझ रहा हूं राम। हो सकता है, जग्गू का खून व्वांग ने अपना भेद खुल जाने के डर से ही किया हो।
जरूर ऐसी बात होगी। मुझे तो अब रहीम की चिंता होने लगी है। पता नहीं व्वांग ने रहीम का अपहरण किस उद्देश्य से किया है।

तभी टेलीफोन की घण्टी एक बार फिर बज उठी।
ट्रिन ट्रिन!
अब किसका फोन हो सकता है!

चीफ मुखर्जी ने रिसीवर उठाया, फिर एक-दूसरे का परिचय जानने के बाद पता नहीं दूसरी ओर से क्या कहा गया कि चीफ मुखर्जी चीख उठे।
ओ यू फूल! वह तुम सबकी आंखों में धूल झोंककर निकल गया और तुम लोग लकीर पीटते हुए मुझे अब फोन कर रहे हो।

दूसरी ओर से फिर कुछ कहा गया और चीफ मुखर्जी ने गुस्से से रिसीवर क्रेडिल पर पटक दिया।
नालायक! कामचोर! सब बेकार हो गये हैं। मैं एक-एक को बर्खास्त कर दूंगा! इस विभाग का एक भी एजेन्ट अब किसी काम का नहीं रहा।
आखिर हुआ क्या चीफ अंकल?

अभी कुछ देर पहले की फ्लाइट से व्वांग और उसका असिस्टेंट चुंग हांग-कांग के लिये उड़ गये हैं।
क्याSSS?

उफ! क्या आपके आदमियों ने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की।
मेकअप में होने के कारण वे लोग उसे तुरन्त ही नहीं पहचान पाये थे और जब तक छानबीन करने के पश्चात् वे असलियत जान सकें, विमान उड़ान भर चुका था।

ओफ! यह बहुत बुरा हुआ?

अच्छा, क्या उन्होंने यह बताया कि रहीम उनके साथ था या नहीं।
नहीं! रहीम उनके साथ नहीं था।

तब उन लोगों ने जरूर रहीम को चीन पहुंचा दिया होगा।

चीफ आप जल्द से जल्द चीन जाने वाले किसी भी विमान में मेरी एक सीट बुक करा दीजिए, मैं तुरन्त चीन जाना चाहता हूं!
ठीक है! एक घण्टे बाद जाने वाली फ्लाइट से मैं तुम्हारी टिकट बुक करा देता हूं, तुम आवश्यक तैयारी करके एयरपोर्ट पहुंच जाओ!

राम उसी समय अपने घर पहुंचा और सफर की तैयारी करने लगा।
मम्मी! मैं रहीम की तलाश में दूसरे शहर जा रहा हूं! दो-चार दिन में लौट आऊंगा। आप किसी बात की चिंता मत करना। रहीम जहां भी है, ठीक-ठाक है।
अपना ख्याल रखना बेटा! पता नहीं मेरा दिल क्यों घबरा रहा है?
राम ने जानबूझकर राधा देवी को असलियत नहीं बताई थी, ताकि वे घबरा न जायें।

और ठीक एक घण्टे बाद राम का विमान चीन की ओर उड़ान भर रहा था।

टैक्सी चल पड़ी! परन्तु अभी टैक्सी ने कुछ ही फासला तय किया होगा कि राम को अपना सिर चकराता हुआ-सा महसूस हुआ!

ओह! यह क्या हो रहा है मुझे! दिमाग सुन्न-सा होता जा रहा है।

फिर इससे पहले कि राम कुछ और कह या कर पाता, उसकी चेतना ने उसका साथ छोड़ दिया और वह बेहोश होकर पिछली सीट पर लुढ़क गया।

हा-हा-हा!

और जब राम को होश आया।
राम भइया, कैसे हो तुम?
अरे रहीम!
राम ने तुरन्त रहीम को अपने गले से लगा लिया।
रहीम, मेरे भाई, कैसे हो तुम?
मैं तो ठीक हूं राम भइया! लेकिन तुम यहां कैसे पहुंच गये?

राम को जैसे होश आया।
ओह! मैं इस समय कहां हूं?
तुम और मैं इस समय एक सैनिक छावनी में हैं...

...लेकिन तुम यहां तक कैसे पहुंचे?
तब राम ने उसे सारी बात बता दी।

फिर रहीम ने भी उसे सारी आप बीती बता दी और अन्त में बोला—
मुझे पकड़कर यहां भेजने वाला त्वांग ही है राम भइया! और उसने तुम्हें यहां लाने के लिये मुझे केवल चारे के रूप में इस्तेमाल किया है।
क्याsss?

हां राम भइया! मैंने उसे अपने साथियों से बातचीत करते हुए कुछ इसी प्रकार की बात करते हुए सुना था!
प... परन्तु वह मुझे यहां क्यों लाना चाहता था?

अब यह तो वही जाने?

रहीम ठीक ही कह रहा है राम! तुम्हारी क्यों का जवाब केवल मैं ही दे सकता हूं!
ओह! तुम?
हां, मैं! तुम रहीम से यही जानना चाहते थे ना कि तुम्हें और रहीम को यहां क्यों लाया गया है?
हां
???
तो सुनो, मैं तुम्हारे पिता कर्नल राघव, जो आजकल उत्तरी सीमा पर एक पुल का निर्माण करवा रहे हैं, से वहां मौजूद एक सैनिक राज जानना चाहता हूं
???
जैसे उस पुल का निर्माण क्यों करवाया जा रहा है। वहां सैनिक ठिकाने कौन-कौन से हैं तथा वहां सैनिकों की कुल तादाद कितनी है! इसी तरह के कुछ प्रश्न और भी हैं, जिनका उत्तर तुम्हारे पिता ही हमारी सीक्रेट सर्विस को ठीक-ठीक दे सकते हैं।
ओह!
तभी रहीम कठोर स्वर में बोल उठा—
वांग! तुम मेरे अंकल कर्नल राघव के पत्थर स्वभाव से शायद वाकिफ नहीं। वे मरते मर जायेंगे, लेकिन अपने देश के सीक्रेट्स कभी तुम्हें या देश के किसी भी दुश्मन को नहीं बतायेंगे।
हा-हा-हा!
हा-हा-हा! मैं जानता हूं छोकरे, इसीलिए तो तुम दोनों को इतने पापड़ बेलने के पश्चात् यहां पर लाया हूं।
क्या मतलब?

मतलब यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि हिन्दुस्तानी सीना सिर्फ एक ही चीज से घायल हो सकता है, सिर्फ एक ही बात से उसका दिल मोम की भांति पिघल सकता है
???
...और वह चीज है औलाद! हा-हा-हा! हिन्दुस्तानी लोगों को देश या किसी अन्य चीज से ज्यादा अपनी औलाद से प्यार होता है
... हा-हा-हा! और मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे कारण कर्नल राघव का सीना भी मोम की तरह पिघल जायेगा और वे तुम्हें कष्ट में देखकर हमारे हाथों अपना ईमान-धर्म, स्वभाव, देश सबकुछ बेचने के लिये तैयार हो जायेंगे
और अपने देश के महत्त्वपूर्ण राज हमें बता देंगे।
ओह! तो यह बात है!
नहीं-नहीं, तुम ऐसा हरगिज नहीं करोगे।
अब मेरी समझ में आया कि त्वांग ने रहीम को चारे के रूप में इस्तेमाल करके मुझे यहां आने पर क्यों मजबूर किया
... उफ! काफी खतरनाक योजना है इसकी। यदि मैं यहां से तुरन्त ही नहीं निकला तो यह हमारे और डैडी के साथ कुछ भी बर्ताव कर सकता है।
हा-हा-हा!

ज्यादा सोचने-समझने में अपनी खोपड़ी खराब मत करो बच्चे! हां, अपनी जानकारी के लिये अपनी खोपड़ी में यह बात जरूर नोट कर लो कि हमारा एक विशेष पत्र कल तुम्हारे पिता तक पंहुच जायेगा।

अति भयानक! अब तो कुछ करना ही पड़ेगा! वह भी अभी और इसी वक्त!

सोचकर राम ने आंखों ही आंखों में रहीम को कोई इशारा किया

मरो या मारो! ध्यान रहे, या तो हमें मरना है या फिर यहां से निकल भागना है। जीवित अवस्था में हमें किसी भी हालत में इनके हाथ नहीं लगना है।

और दोनों उस कोठरी से निकलकर बाहर की ओर दौड़ पड़े।

मार्ग में उनके सामने जो भी दुश्मन सैनिक आया, उस पर उन्होंने दया करने की बजाय गोलियों की वर्षा कर दी।

तड़-तड़-तड़!

रेट-रेट-रेट!

हाय मरा!

ई... ई... ई...!

उफ!

आह!

फायरिंग की आवाज से उस छावनी में हंगामा मच गया। तुरन्त चारों तरफ खतरे की घण्टी बज गई।

हिन्दुस्तानी कैदी भाग रहे हैं।

पकड़ो-पकड़ो!

टन्-टन्-टन!

वे रहे दुश्मन कैदी!

खत्म कर दो उन्हें!

परन्तु इससे पहले कि वे राम-रहीम को खत्म करते, राम-रहीम ने ही उन्हें खत्म कर दिया।

तड़-तड़-तड़!

आह!

उफ!
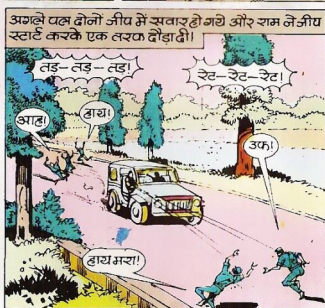
शीघ्र ही राम जीप को सुरक्षित छावनी से बाहर ले आया और मुख्य सड़क पर एक ओर दौड़ा दिया।

राम भइया, हम सैनिक छावनी से तो बाहर निकल आये, लेकिन जायेंगे किधर और कहां? ये शैतान तो हमारा पीछा आसानी से छोड़ने वाले नहीं।

फिलहाल तो जहां सींग समा रहा है, जीप को ले जा रहा हूं। आगे ईश्वर मालिक है।

रहीम ने जीप में इधर-उधर निगाहें दौड़ाई तो उसे एक सीट के नीचे रखे थैले में हैंड ग्रेनेड मिल गये।

वाह! राम भइया, यहां तो ग्रेनेड भी मौजूद हैं।

यह और भी बढ़िया रहा। अब मौका पड़ने पर मियां का जूता मिया के सिर पर ही इस्तेमाल करना।

शीघ्र ही उन्हें पीछे से अनेक जीपें आती दिखाई दीं।
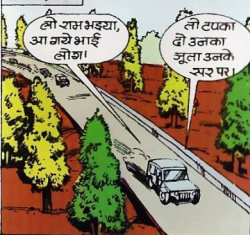
अगले ही पल रहीम ने एक के बाद एक कई दस्ती बम पीछा करती जीपों की ओर उछाल दिये।

राम-रहीम दुश्मनों के देश में विनाश मचाते हुए एक तरह से आग बरपा करते हुए आगे बढ़ते रहे।

उधर से देखने में वह एक आग लगा देश ही नजर आ रहा था।

तभी आकाश में ठीक जीप के ऊपर एक हैलीकॉप्टर मंडराया और राम-रहीम बुरी तरह चौंक उठे।
घर्र...र्र..र्र..!
उफ! अब जान बचनी मुश्किल हो जायेगी।
मेरी मानो तो हमें जीप छोड़ देनी चाहिए राम भइया!

परन्तु सवाल यह पैदा होता है कि हम जीप छोड़कर जायेंगे कहां? आस-पास भी तो कोई छुपने की जगह नहीं है।
घर्र...र्र...र्र...!

उफ! अब क्या करें! यदि हैलीकॉप्टर ने ऊपर से गोले बरसाने आरम्भ कर दिये तो बचना बिल्कुल ही मुश्किल हो जायेगा।
अब जो होगा देखा जायेगा।

तभी हैलीकॉप्टर से एक जंजीर से जुड़ा शिकंजा निकला और तेजी से नीचे दौड़ती जीप की ओर बढ़ा।
राम भइया, हमें दूसरे ढंग से फंसाने की कोशिश की जा रही है। शायद वे अब भी हमें जिंदा पकड़ना चाहते हैं।

परन्तु इससे पहले कि राम जीप को उस शिकंजे से बचाने की कोशिश करता, शिकंजा पूरी जीप की बाडी पर कस गया।
उफ! बुरी तरह फंस गये।
अरे बापरे! राम भइया, अब क्या करें?

घर्र र्र र्र
ऊपर खींचो और हैडक्वार्टर की ओर ले चलो।

अगले ही पल हैलीकॉप्टर जीप को उठाकर एक तरफ चल पड़ा!
राम भइया, अब क्या करें?
सिवाय आत्महत्या के और कोई चारा नहीं है। हमने जीते-जी कदापि इनके हत्थे नहीं चढ़ना है!
तो क्या नीचे कूद पड़ें!
हां!
तभी राम की दृष्टि नीचे समुद्र पर पड़ी।
रहीम, जान बचाने का अच्छा मौका है। नीचे समुद्र है, कूद पड़ो जल्दी से।
ठीक है।
और दोनों ने जीप से नीचे छलांग दी।
सर, वे लोग जीप से कूद पड़े!
शूट दैम!
तड़-तड़-तड़!
रेट-रेट-रेट!
परन्तु सौभाग्य से राम-रहीम का कोई अहित नहीं हुआ और वे सकुशल समुद्र में जा गिरे।
छपाक
छपाक
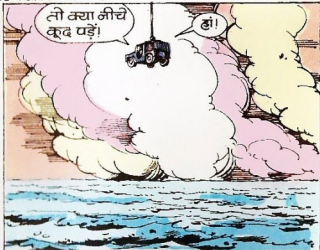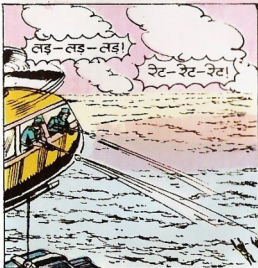
नौसेना को मेरी ओर से आदेश दो कि वे हर कीमत पर उन दोनों की तलाश करें।
यस सर!
इधर कुछ देर बाद राम-रहीम ने जब पानी से सिर बाहर निकाला तो उन्हें अपने सिर के ऊपर हैलीकॉप्टर उड़ता हुआ तथा चारों तरफ नौसेना के स्टीमर दिखाई दिये।
अब क्या करें राम भइया?
नीचे डुबकी लगाकर आगे बढ़ते रहो।
परन्तु मंजिल तो नजर नहीं आ रही, फिर बढ़ें किधर?
वह देखो, एक चीनी नौसेना का स्टीमर हमारी ओर ही आ रहा है। चलो, किसी तरह उस पर चढ़कर, उसी पर कब्जा करते हैं।
जब स्टीमर राम-रहीम के कुछ निकट हुआ तो दोनों डुबकी लगा गये।
और जब स्टीमर उनके ऊपर से होता हुआ आगे बढ़ा तो दोनों स्टीमर के पिछले भाग को पकड़कर...
... उचककर उसके ऊपर चढ़ गये।

स्टीमर पर ज्यादा सैनिक नहीं थे, अतः उनसे निपटने में उन्हें विशेष कठिनाई नहीं हुई।
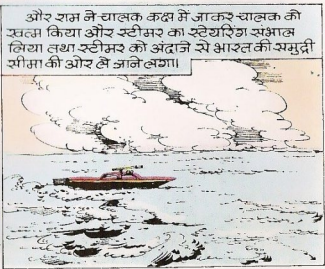
और जब दुश्मनों ने अपने एक स्टीमर को तीव्र गति से भारत की जल सीमा की ओर बढ़ते देखा-
अरे देखो, हमारा एक स्टीमर दुश्मन देश की ओर जा रहा है।
जरूर उस स्टीमर पर इन हिन्दुस्तानी छोकरों ने कब्जा कर लिया होगा...
... वे हिन्दुस्तानी छोकरे हमारी ही नौसेना का स्टीमर लेकर अपने देश की ओर भाग रहे हैं!
अटैक करो और स्टीमर समेत नष्ट कर दो उन्हें। इसके अलावा अब और कोई चारा नहीं है।
और राम-रहीम के स्टीमर पर एक साथ कई तरफ से हमला हुआ।
धांय-धांय!
तड़-तड़-तड़!
धड़ाम
धड़ाम
तड़-तड़-तड़!
राम भइया। दुश्मनों के स्टीमरों और हैलीकॉप्टर से तो हम पर जबरदस्त हमला बोल दिया गया है।
ठहरो, मैं चीफ से कॉन्टेक्ट करता हूं। अब तो वही हमारी मदद कर सकते हैं।
राम ने अपने जूते के तले से नन्हा-सा, किन्तु शक्तिशाली ट्रांसमीटर निकालकर चीफ मुखर्जी से सम्पर्क करना आरम्भ कर दिया।
हैलो-हैलो! एजेण्ट 00½ कालिंग, चीफ हैलो!
धड़ाम!
धड़ाम!
धांय-धांय!
जल्दी ही सम्पर्क जुड़ा।
हैलो एजेण्ट 00½! मैं चीफ मुखर्जी बोल रहा हूं। अपनी रिपोर्ट और पोजीशन बताओ।
धड़ाम!
हम इस समय बड़ी संकटमय स्थिति में हैं चीफ! हमें तुरन्त मदद भेजिए।
फिर राम ने जल्दी-जल्दी सारी बात चीफ को बता दी।

तुम भारतीय सीमा की ओर बढ़ते रहो राम! मैं जल्द ही मदद लेकर तुम तक पहुंच रहा हूं।
ओ. के. चीफ!
और कुछ देर बाद—
रहीम! वो देखो, हमारे देश से हमारे लिये मदद आ पहुंची है।
हुर्रे!
उधर भारतीय फोर्स की आकाशीय और जल मार्ग से राम-रहीम की मदद को आते देख दुश्मनों के बेड़े में खलबली मच गई।
भारतीय सेना अपने वतन के छोकरों की मदद के लिये आ पहुंची है सर! अब क्या आदेश हैं?
मुकाबला करो। वे छोकरे किसी भी कीमत पर बचकर नहीं जाने चाहिए।
शीघ्र ही दोनों तरफ से भयानक मुकाबला आरम्भ हो गया, जबकि राम-रहीम का स्टीमर अब अपने बेड़े के मध्य पहुंचकर सुरक्षित हो गया था।
धड़ाम!
तड़-तड़-तड़!
धड़ाम!
परन्तु जल्दी ही दुश्मन बेड़ा उस जबरदस्त लड़ाई से घबरा उठा।
हम दुश्मनों से मुकाबला नहीं कर पा रहे हैं सर! वे हमसे ज्यादा शक्ति सम्पन्न हैं।
देख रहा हूं! अब दुश्मनों के सामने टिके रहना, आत्महत्या करने के समान है
... इसलिए शान से पीछे हटो और पलटकर अपने देश की ओर भाग लो। इसी में बहादुरी और हम सबकी भलाई है।
राइट सर!

मनोज कॉमिक्स

अगले ही पल दुश्मनों का बेड़ा अपने हैलीकॉप्टर समेत पलटकर अपने देश की ओर भाग खड़ा हुआ।
हुर्रे! हमारी विजय हुई! दुश्मन भाग खड़ा हुआ।

फिर शीघ्र ही राम-रहीम को एक भारतीय युद्धपोत पर चढ़ा लिया गया।

उस युद्ध पोत पर स्वयं चीफ मुखर्जी भी उपस्थित थे। उन्होंने बारी-बारी से राम रहीम को अपने सीने से लगा लिया।
मेरे बच्चो!
अंकल!

बेटे! एक बार फिर तुम दोनों ने दुश्मनों के दांत खट्टे करके यह सिध्द कर दियाहै कि तुम वास्तव में भारत मां के सच्चे सपूत हो। भारतवर्ष हमेशा तुम्हारे इस महान् कारनामे को याद करता रहेगा।
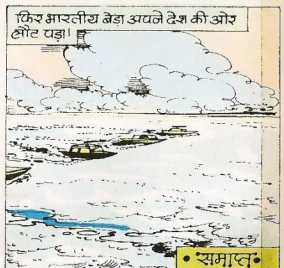
फिर भारतीय बेड़ा अपने देश की ओर लौट पड़ा।
• समाप्त •